ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

प्रशासन में बढ़ती महिलाओं की भूमिका

Bhanwar Lal Meena

Assistant Professor, Samrat Prithviraj Chauhan Govt. College, Bhim, Rajsamand, Vidya Sambal Yojana, India

सार

मनु ने मनुस्मृति में कहा था ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात्देवगण ऐसे स्थान पर वास करते हैं, जहाॅं स्त्रियों का सम्मान होता है, शायद इसी भावना के तहत् प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को विषेष स्थान प्राप्त था। उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था (ईसापूर्व 300 वर्ष पहले)। महिलाओं की सामाजिक स्थिति बैदिक काल से ही पतन के कगार पर आना प्रारंभ हो गई, मुगल काल में तो महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय हो गई थी। सती प्रथा और पर्दाप्रथा अपने चरम सीमा पर थे, महिलाओं की षिक्षा लगभग समाप्त हो चुकी थी, परिवर्तन के इस युग में हर चीज बदल रही है। बात महिला राजनीति की है, आजादी की लड़ाई के दौरान और स्वतंत्रता के दौर में राजनीतिक पटल पर कई महिलाएें आयी और अपनी छाप छोड़ गई लेकिन सफल महिला राजनीतिज्ञों की संख्या कम है। महिला को राजनीतिक प्रषिक्षण दिया जाना आवष्यक है। राजनीतिक जागरूकता अति आवष्यक है जिससे राजनीति व प्रषासन में महिला अधिक से अधिक अपना योगदान दे सके।

परिचय

महिलाओं को इस क्षेत्र में आगे आने के लिए निम्न परिस्थितियां महिलाओं के लिए आवष्यक है-
(1) षिक्षा
(2) समानता (स्त्री/पुरूष)
(3) महिला आरक्षण
(4) सामाजिक सम्मान
(5) सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन

इन सभी बातों से महिलाओं को आगे बढ़ने में सहयोग प्राप्त होगा।[1]

भारत में विभिन्न कालों में महिलाओं की स्थिति दयनीय ही रही है, बात महिला राजनीति की है, आजादी की लड़ाई के दौरान और स्वतंत्रता के बाद के दौर मे राजनीतिक पटल पर कई महिलायें आई और अपनी छाप छोड़कर चली गई, लेकिन सफल महिला राजनीतिज्ञों की संख्या लगभग नगण्य है। समुची दुनियां सहित भारत का राजनीतिक पटल भी लगभग महिला बिहीन ही है, आज के राजनीतिक प्रधान समाज में किसी भी वर्ग का राजनीतिक प्रतिनिधित्व बहुत मायने रखता है। महिलाओं को चैके से संसद तक लाने की बातें तो बहुत होती है, लेकिन उसकी जिन्दगी घर, परिवार चुल्हे चैंके और ग्लैमर आर्टिकल तक ही सिमटी रहती है।

महिलायें केवल माता, पत्नि या बेंटियां ही नहीं है, वे समाज के जिम्मेदार नागरिक भी है। किसी भी राष्ट्र को बड़ा बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ होता है। भारतीय समाज में महिलाओं को देवी का स्थान दिया जाता है, लकिन आये दिन देखने में आता है कि महिलाओं के साथ अत्याचार और शोषण बहुत अधिक हो रहे हैं, यह शोषण शारीरिक और मानसिक सभी तरह का होता है। ऐसे स्थिति में हम कैसे विष्वास करें कि महिला का स्थान देवी के समान है। महिला को देवी कहने वाले लोग ही उसका शोषण करने से हिचकते नहीं है।

जिस समाज में महिलाओं का शोषण होगा वह समाज कभी विकास नहीं कर सकेगा क्योंकि समाज का विकास करने के लिए महिलाओं को साथ लेकर चलना जरूरी है, जैसे कोई भी परिवार महिला और पुरूष के साथ-साथ चलना आवष्यक है।

भारतीय समाज पुरूष प्रधान होने से पुरूष अपने आप को श्रेष्ठ मानता है और नारी को अपनी तुलना में तुच्छ ही समझता है, इस प्रकार की मानसिकता को बदलना आवष्यक है। वर्तमान समय में षिक्षा का विकास होने के कारण और महिलाओं के षिक्षित होने के कारण स्थिति में परिवर्तन दिखाई देता है, क्योंकि महिलायें षिक्षित होकर परिस्थितियों का सामना करना सीख गई है। अपने अधिकारों और शक्तियों को पहचानने लगी है, इसलिए राजनीति में आकर पुरूष के साथ देष के विकास में अपने को भागीदार बनाना चाहती है, लेकिन इसमें पूरी तरह वह सफल नहीं हैं, क्योंकि राजनीति मं आने के लिए जिस तरह के हथकंडे पुरूष अपनाता है उसे नारी नहीं अपना सकती, जिससे आज नारियों को समान सहभागिता नहीं मिल पाई है। मनी, मसल्स और मैंन पावर के कारण लोगों का चुनाव पर विष्वास डगमगाने लगा है इस चुनावी प्रवृत्ति का सबसे बुरा असर महिलाओं की राजनीतिक हैसियत पर पड़ा है।[2]

आज हम पंचायत स्तर पर पाते हैं कि महिलाओं को आरक्षण देकर गांव की और शहरों की राजनीति तक स्थान तो अच्छा मिला है, लेकिन वहां भी कई दोष पाये गये हैं जिससे उसे पुरूष के अधीन की कार्य करना पड़ रहा है अगर हम राज्यों की विधान सभी व संसद में देखें तो वहां पर भी महिला का स्थान नगण्य है।

महिलाओं को 33 प्रतिषत आरक्षण देने की बात कई सालों से की जा रही है लेकिन आज तक वो विधेयक पारित नहीं हुआ है, वह विधेयक कब संसद की दहलीज पार कर पायेगा यह आज न तो लोक सभा को पता है और न ही सरकार को। सामाजिक राजनीतिक और अन्य कार्य क्षेत्रों में महिलाओं के सामने आने वाले मुष्किलों को दूर करने वाली बात कहीं जाती है व उसका हल भी निकाला जाता है, लेकिन उसका पालन नहीं किया जाता है। समाज को इस ओर ध्यान देना चाहिए कि ऐसा क्यों होता है ?

महिला की स्थिति के बारे में कहा जाता है कि चुनाव में तथा रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े हुए प्रष्नों पर अपने राय जाहिर करने की तरह ही राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी में एक क्रमिक वृद्वि के बावजूद राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करने की सामथ्र्य अभी तक महिलाओं के पास नहीं है, इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति का कारण राजनीतिक दलों और महिलाओं की संख्या बहुत कम पायी जाती है। हमारा आधुनिक भारतीय समाज आज भी राजनीति में महिलाओं के लिए समान प्रतिनिधित्व की सिद्वांत को अपनाने में हिचकिचा रहा है, जिस कारण से महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं बढ़ पा रही है।

आज भारत में महिलायें सभी क्षेत्रों में आ रही है। वे अपने मेहनत व लगन के बल पर सभी क्षेत्रों में सफलता के झण्डे गाड़ रही है, तो फिर राजनीति के क्षेत्र में पीछे क्यों हो रही है? इतिहास और वर्तमान गवाह है कि भारतीय महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के वर्चस्व को तोड़ा है और कई क्षेत्रों में तो पुरूषों से भी अधिक प्रभावी भूमिका है, लेकिन वे राजनीति के क्षेत्र में पुरूषों के मुकाबले बहुत पीछे भी छुट गई है। महिलाओं को समान वैधानिक व राजनीतिक अधिकार दिये जाने चाहिए तभी भारत की आजादी सार्थक हो पायेगी।[3]

राजनीति मे महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी और सत्ता में उनकी समान हिस्सेदारी के बिना हमारी आधुनिकता, विकास और सभ्यता , सब कुछ बेमानी है, इसलिए राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी के लिए समाज के सभी वर्गों को प्रयास करने होंगे। सभी लोगों को अपने जिम्मेदारी का निर्वहन करना होगा।

एक ओर राजनीति महिलाओं की कमी को तो झेल ही रही है, दूसरी ओर आम भारतीय महिलायें भी राजनीतिक रूप से अक्रियाषील ही है। वे विभिन्न स्तरों के चुनाव में मतदान तो करती हैं, लेकिन उनका मत अधिकतर उसी उम्मीद्वार को जाता है जिससे उसके पुरूष रिष्तेदार चाहते हैं। वास्तव में महिलायें अपने मताधिकार का तो उपयोग करती हैं, लेकिन पारिवारिक बंधनों के चलते वे अपने राजनीतिक अधिकारों का सहीं तरीके से उपयोग नहीं कर पाती।

राजनीतिक दल महिला आरक्षण के हिमायती तो है और वे महिलाओं को राजनीतिक रूप से जागरूक और क्रियाषील बनाने की जरूरत पर बल देते हैं, लेकिन हकीकत कुछ और ही दिखाई देती है। राजनीतिक दल महिलाओं को राजनीति में भागीदार और सत्ता के हिस्सेदार की वकालत तो करते हैं लेकिन व्यवहार में उनकी कार्यप्रणाली बिल्कुल उलट है, यही कारण है कि महिला उम्मीद्वार को न तो अधिक टिकट ही दिये जाते हैं, और नहीं उन्हें संगठन में कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जाती है।

लेकिन अब स्थिति बदलने वाली है क्यों कि महिलायें राजनीतिक रूप से धीरे-
धीरे जागरूक हो रही हैं। वे राजनीति में भागीदारी और सत्ता में हिस्सेदारी और सत्ता में हिस्सेदारी चाहती हैं इसलिए तो मेघा पाटकर, अरूंधती राय, वंदना षिवा और अरूणा राय जैसी महिला राजनीतिज्ञों की जमात उभाकर सामने लाना चाहती है।

पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं को 33 प्रतिषत आरक्षण देते समय हमारे पुरूष प्रधन समाज के प्रतिनिधि अच्छी तरह जानते थे कि इन चुनाव में जो महिलायें विजय प्राप्त करने के बाद सत्ता में भागीदारी निभाने को आगे आयेंगी, तो उनमें से अधिकतर वे महिलायें होंगी जो अषिक्षित और राजनीतिक रूप से निष्क्रिय होगी तथा परंपरागत रूप से पुरूषों की मुठ्ठी में कैद हांगी और उन्हें कठपुतली की भांती अपने इषारे पर नचाना आसान होगा, और यह बात वैसे ही हुई जैसा पुरूष प्रधान व्यवस्था ने सोंचा था। पुरूषों ने पंचायती राज व्यवस्था में घेरलु महिलाओं को इसलिए जाने दिया कि वे पदासीन होतेहुए भी पुरूषों के चंगुल से बाहर जाने वाली नहीं थी, किन्तु वे महिलाओं को दिल्ली और अन्य प्रांतों की राजधानियों में भेजना इसलिए पंसद नहीं करते क्योंकि उन्हें महिलाओं के अपने हाथ से निकल जाने का डर है।[4]
आज नहीं तो कल संसद में महिला आरक्षण विधेयक पारित हो जायेगा लेकिन प्रष्न ये उठता है कि आम भारतीय महिला वास्तव में चाहती क्या है? क्या सिर्फ समाज में समानता का अधिकार? समानता का आधार पर पुरूषों जैसा मान-
सम्मान, इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राजनीतिक अधिकार और आरक्षण तो जरूरी है ही, लेकिन साथ ही आवष्यकता है पुरूषों की रूढ़ीवादी सोंच में मौलिक बदलाव लाने की। पुरूष प्रधान राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन करने की और महिलाओं को हीन भावना से उबाकर राजनीतिक रूप से जागृत करने की हमें अपनी विधायिका में सषक्त राजनीतिज्ञ चाहिए न कि डमी और कठपुतली

राजनीतिज्ञ जो पुरूषों के इषारें पर चलते रहें इसलिए जरूरी है कि विधायिका में महिलाओं को आरक्षण देने के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक भी किया जाए ताकि वे सच्चे अर्थों में राजनीतिक भागीदारी पा सके, स्वतंत्र राजनीतिक निर्ण य ले सके और देष के लिए सार्थक काम कर सके। महिला का आत्म सम्मान देष को विकास की ओर शीघ्र ही पहुंचा देगा।

पूरी दुनियां में आज महिला आन्दोलन का शोर है उन्हें विभिन्न प्रकार के अधिकार दिये जाने की बात की जा रही है। महिला सषक्ति करण पर जोर भी दिया जा रहा है, लेकिन फिर भी स्थिति जैसी की वैसी ही है। महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्षम और सक्रिय कैसे बनाया जाये इस पर समाज और शासन को चिंतन करना चाहिए। महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाना भी उन की राजनीतिक स्थिति में सुधार का एक लक्षण माना जा सकता है।

देष को आजाद हुए आज कई साल हो गये हैं जिसमें स्व. इंदिरा गांधी को छोड़कर जितने भी महिलायें राजनीति में आई है वे राजनी तिक रूप में डमी ही साबित हुई है। जब महिला किसी महत्वपूर्ण पद पर पहुंचती है तो उससे उम्मीद की जाती है कि वे आम महि लाओं की बेहतरी के लिए कुछ खास करेगी लेकिन ये उच्च कुल महिला रानीतिज्ञ ऊंचे पद पर पहुंच कर अन्य महिलाओं के दर्द को दूर करना चाहती है तो उसे अन्य लोगों का सहयोग पूरी तरह नहीं मिल पाता है। महिला पर अत्याचार की घटनाऐं बड़ रही है, महि ला सांसद एक शब्द नहीं बोल पाती है, इस बदहाली का एकमात्र कारण है कि महिलाओं की राजनीतिक चेतना में कमी।

अब इस स्थिति को बदला जाना आवष्यक है। महिलाओं को राजनीतिक प्रषिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे पुरूष रिष्तेदारों के हा थों की कठपुलियां न बनी रह जाये।[5]

विधायिका में 33 प्रतिषत आरक्षण जरूरी है, राजनीतिक जागरूकता अति आवष्यक है। महिलाओं के राजनीतिक परिवेष को बदल ने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है, जैसे महिलाओं को राजनीतिक रूप से क्रियाषील बनाया जाये, स्वस्थ व सकारात्मक सामाजिक संरचना का निर्माण आर्थिक आत्मनिर्भरता और पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सहज बनाया जाये। समुचित षिक्षा की व्यव स्था की जाये, नारी के प्रति सोचनें व समझने का नजरियां बदला जाये और उसे पूरी सुरक्षा दिया जाना चाहिए।

प्रतिनिधि संस्थाओं में उसे सहभागी बनाया जाये, राजनीतिक दलों व महिला संगठनों का दायित्व उन्हें सौंपा जाये और अगर काई भी व्यक्ति महिला के साथ दुव्र्यहार करता है तो उसे कड़ी सजा दी जाये।

विचार-विमर्श

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है। दुर्भाग्यवंश विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक कुरीतियां व विकृतियां पैदा हुई, जिससे महिलाओं को उत्पीड़न हुआ।
आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा, लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं। 2030 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुखता है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है।
महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं।[6] प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। इसलिए, यह इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम ''एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता'' है।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865-1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला

चिकित्सक रही है। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है – अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ ओर नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिलाओं डाक्टरों, नर्सो, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व समाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की प्रवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी है। कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। महिमा दतला, एमडी, बायोलॉजिकल ई, ने 12-18 वर्ष की आयु के लोगों को दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन विकसित करने के लिए अपनी टीम का नेतृत्व किया। निस्संदेह, महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं। जैसा कि हम खुद को कोविड -19 के कारण हुई तबाही की पृष्ठभूमि में ष्बिल्ड बैकष् प्रक्रिया में शामिल करते है तों मुझे से लगता कि महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। छठी आर्थिक गणना के अनुसार, हमारे पास देश में 8.05 मिलियन महिला उद्यमी हैं। शॉपक्लूज, घर और रसोई, दैनिक उपयोगिता वस्तुओं की मार्केटिंग के लिए 2011 में राधिका आॅनलाई स्टार्ट -अप शुरू किया गया। यह यूनिकॉर्न क्लब में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय महिला उद्यमी थीं। राजोशी घोष के हसुरा, स्मिता देवराह के लीड स्कूल, दिव्या गोकुलनाथ के बायजू और राधिका घई के 'शॉपक्लूज' अन्य यूनिकॉर्न हैं, जो महिला स्टार्टअप की क्षमता के बारे में बहुत कुछ बयां करते है।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड-अप इंडिया, और स्टार्ट-अप सम्बन्धि कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों, की सुविधा प्रदान करता है। महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्रों मे पावं रखने के लिए महिला स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण है। अब महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी 2030 तक लगभग 150-170 मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। एक आधिकारिक अनुमान के अनुसार, 2018-21 तक स्टार्टअप्स द्वारा लगभग 5.9 लाख नौकरियां पैदा की गईं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से शुरू से ही उद्यमिता के बीज बोने का सार्थक प्रयास किया जा चुका है। हाल ही में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में आयोजित दीक्षांत समारोह में 24 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। जिनमें से 16 लड़कियां थीं। यह सिर्फ एक विश्वविद्यालय की बात नहीं है। वे लगभग हर संस्थान में लड़कों से कहीं बेहतर कर रही हैं। उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा और दृढ़ता है। ''आजादी के अमृत महोत्सव'' वर्ष के पहले भाग में ही केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने 6-12 सितंबर के बीच केवल एक सप्ताह में 2614 स्वयं सहायता समूह के उद्यमियों को सामुदायिक उद्यम निधि का आठ करोड़ साठ लाख रुपये का ऋण प्रदान किया।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबुती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अभियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने-फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए 'अमृत काल' इन्हें समर्पित हो!

परिणाम

महिलाएँ भारतीय इतिहास और संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं से लेकर भारत की आजादी के संघर्ष से लेकर दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होने तक, महिलाओं ने सभी क्षमताओं में आख्यानों को आकार देने में बहुत मजबूत और निर्णायक भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत ने उस विरासत को आगे बढ़ाया है और महिलाओं को जिम्मेदारियां सौंपी हैं जिन्हें वे निभाने में सक्षम हैं। विभिन्न व्यवसायों में सार्थक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने और सामाजिक स्तर के निचले स्तर पर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ठोस प्रयास किए गए हैं। ये पहल लैंगिक समानता के दायरे

से परे हैं। वे महिलाओं को नई चुनौतियाँ लेने के लिए प्रेरित करते हैं और महिलाओं को एक सुरक्षित वातावरण में अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

कुछ नेताओं के विपरीत, जिन्होंने लिंग के आधार पर रक्षा मंत्री की भूमिका को महत्वहीन बना दिया है, नरेंद्र मोदी सरकार देश में निर्णय लेने के उच्चतम स्तर पर महिलाओं की भूमिका को बढ़ाने के लिए अपने रास्ते से हट गई है। सरकार के नीतिगत हस्तक्षेपों ने महिलाओं को अपने समुदायों, संगठनों और घरों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सुसज्जित और सशक्त बनाया है। यह यूपीए द्वारा अपनाई गई प्रतीकात्मकता से स्पष्ट विचलन है। पार्टी के भीतर महिलाओं के प्रतिनिधित्व की कमी से संबंधित मुद्दों की अनदेखी से लेकर जाने-माने राजनेताओं की बेटियों और पत्नियों को बढ़ावा देने तक, उस युग में स्व-निर्मित महिलाओं के लिए बहुत कम था। महिलाओं को केवल महिलाओं से जुड़े मुद्दों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। हमें उनकी क्षमताओं को उनके लिंग से परे ले जाने की जरूरत है, और मोदी सरकार ने भावना और कार्य दोनों में इसका अभ्यास किया है।[5]

सभी के लिए प्रतिनिधित्व
• मंत्रिपरिषद में 9 महिलाओं, सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) में दो महिलाओं (भारत के लिए पहली) और पहली पूर्णकालिक रक्षा मंत्री सहित, नेतृत्व सक्रिय रूप से अपने कार्यों से महिलाओं के लिए कांच की छत को तोड़ रहा है। . आम नागरिकों के लिए यह प्रतिनिधित्व किसी विशेष नाम या संख्या तक सीमित नहीं है. यह बड़ी आबादी के लिए एक बहुत ही उत्साहजनक संकेत भेजता है, यानी, सामान्य परिवारों की महिलाओं के लिए, बिना किसी प्रसिद्ध उपनाम के, बाहर जाना और पूरी तरह से अपनी क्षमता और योग्यता के आधार पर अपनी पहचान बनाना संभव है।

• कई अवसरों पर यह देखा गया कि प्रशिक्षण की कमी के कारण, पंचायतों की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों (ईडब्ल्यूआर) के लिए निर्णय लेने का काम परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा किया जाता रहा है। इससे पंचायत निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का उद्देश्य विफल हो गया। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने गांवों के शासन और प्रशासन में उनकी क्षमता, क्षमता और कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से पंचायतों की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों (ईडब्ल्यूआर) के लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। यूनिकॉर्न स्टार्टअप की भारतीय महिला सीईओ की

सराहना एक सामान्य परिवार से. यह महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में युवा लड़कियां नीति और कानून निर्माताओं के पूर्ण समर्थन से अपने सपनों को साकार करने में सक्षम हैं।

• देश के सबसे बड़े एंजेल निवेशक क्लबों में से एक ने नोट किया है कि महिलाओं से आने वाले विचारों की संख्या 10% (2014) से बढ़कर 30% (2018) हो गई है।[8]
• 2018 में, तीन महिलाओं को भारतीय वायु सेना में लड़ाकू-पायलट के रूप में शामिल किया गया। हर उस युवा लड़की के लिए जो यह मानने के लिए बाध्य थी कि उसके अंदर लिंग-आधारित बाधाएं हैं जो उसे अपनी मातृभूमि के लिए लड़ने से रोकती हैं, यह एक स्वागत योग्य प्रस्थान था।

सभी के लिए सशक्तिकरण

• 74% से अधिक लाभार्थियों में से 9 करोड़ से अधिक महिलाओं को मुद्रा और स्टैंड-अप इंडिया से संयुक्त रूप से लाभ हुआ है। ये महिला उद्यमी भारत की महिला सशक्तिकरण की सामाजिक राजदूत हैं। वे न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, बल्कि वे अधिक महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर पैदा करके उनका समर्थन करने की स्थिति में भी हैं।[7]

• स्वच्छता सुविधाओं की कमी के कारण बहुत सी लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं या मासिक धर्म के दौरान अनुपस्थित रहती हैं। माध्यमिक विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिसका मुख्य कारण स्कूल में शौचालयों की पहुंच है। शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली (यू-डीआईएसई) 2015-16 के अनुसार, माध्यमिक शिक्षा में लड़कियों का नामांकन 2013-14 में 76% के मुकाबले बढ़कर 80.97% हो गया है।

• रसोई गैस जैसी बुनियादी उपयोगिता तक पहुंच प्रदान करके, हमने महिलाओं को अतिरिक्त समय देकर सशक्त बनाया है, जिसे वे अपनी इच्छा से उपयोग करना चुन सकती हैं।

• प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के 75% मकान मालिक महिलाएं हैं। यह महिलाओं को प्रदान की गई सामाजिक सुरक्षा का एक अभूतपूर्व स्तर है।
नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले एनडीए का कार्य महिलाओं के लिए सामाजिक सशक्तिकरण या वित्तीय स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। लाभार्थी की शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर, दोनों को पर्याप्त अनुपात में वितरित करना जनादेश

था। एक महिला के लिए जिसे न केवल लिंग-पूर्वाग्रह के माध्यम से अपना काम करना पड़ता है, बल्कि अक्सर अपनी योग्यता साबित करने के लिए दोगुनी मेहनत करनी पड़ती है, व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों मोर्चों पर समय काफी बदल गया है। चूंकि निवेशक लिंग से परे देखते हैं, इसलिए यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि महिलाओं के लिए अवसरों और संसाधनों में बदलाव ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

किसी भी राष्ट्रीय राज्य के लिए आर्थिक एवं सामाजिक विकास महत्व रखता है सुशासन के लिए जनता का विकास और उनका कल्याण ही सरकार का लक्ष्य का है। आज राजनीतिक में महिलाओं की भागीदारी एक समस्या और महिलाओं की राजनीतिक भविष्य एक महत्वपूर्ण विषय बन जाता है क्योंकि सुशासन की कुंजी महिलाएं है। महिलाओं की राजनीतिक में भागीदारी को विकास के सभी रूपों में एक आवश्यक तत्व माना जाता है। राजनीतिक लोकतंत्र में सभी नागरिकों को स्त्री व पुरुष दोनों को प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता तथा कानून के समान संरक्षण की सुनिश्चित प्रदान करता है । सरकारी नीति निर्माण निकाय में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और उसकी आर्थिक सहायता से उसका सशक्तिकरण तथा विकास संभव है ।[8] 1947 के बाद भारत में विभिन्न स्थानीय सरकारी संस्थाओं में विकेंद्रीकरण द्वारा महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए कई पहल की गई । महिलाएं आम चुनाव लड़ती हैं और भारी मतों से जीत हासिल करती हैं चाहे ग्राम स्तर पर हो या शहर। राजनीतिक में भेदभाव को समाप्त कर समानता की प्रमुखता दी गई है। सुशासन स्थापित करने के लिए जरूरी है कि सुशासन के सिद्धांत को शासन या प्रशासन द्वारा अपनाया जाए ताकि महिलाओं का सशक्तिकरण और स्वायत्तता, सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक सुधार हो सके। अत: यह अध्ययन सुशासन को स्थापित करने के लिए महिलाओं की भागीदारी और उनके सशक्तिकरण पर जोर देता है । महिलाओं की भागीदारी की बढ़ोतरी तथा महिलाओं का सशक्तिकरण और सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार हो सके, भागीदारी पारदर्शिता, और जवाबदेही से ही संभव है जो सुशासन स्थापित करने में सहायक है।[9]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. भारतीय शासन व राजनीति:- डा॰.बी.एल.फाड़िया
2. सामाचार पत्रों के लेख - नवभारत
3. पत्रिका – मनोरमा
4. गोपालन सरला , पूर्वक , पृ 283
5. महिलाएं तथा शासन राज्य की पूर्ण कल्पना एक रिपोर्ट (एकत्र) सोसायटी फा॰र डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स फा॰रविमेन,नई दिल्ली, 2002 ,पृ 9
6 द टाइम्स ऑफ इंडियन, 10 अक्टूबर, 2010, पृ 1
7. महिलाओं तथा शासन , की पूर्ण कल्पना , पूर्वक , पृ 24
8. डॉक्टर सरला गोपालन , समानता की और पूर्ण कार्य , भारत में महिलाओं की स्थिति - 2001 राष्ट्रीय महिला आयोग 2002 पृ 283
9. मेकिस्से की रिपोर्ट

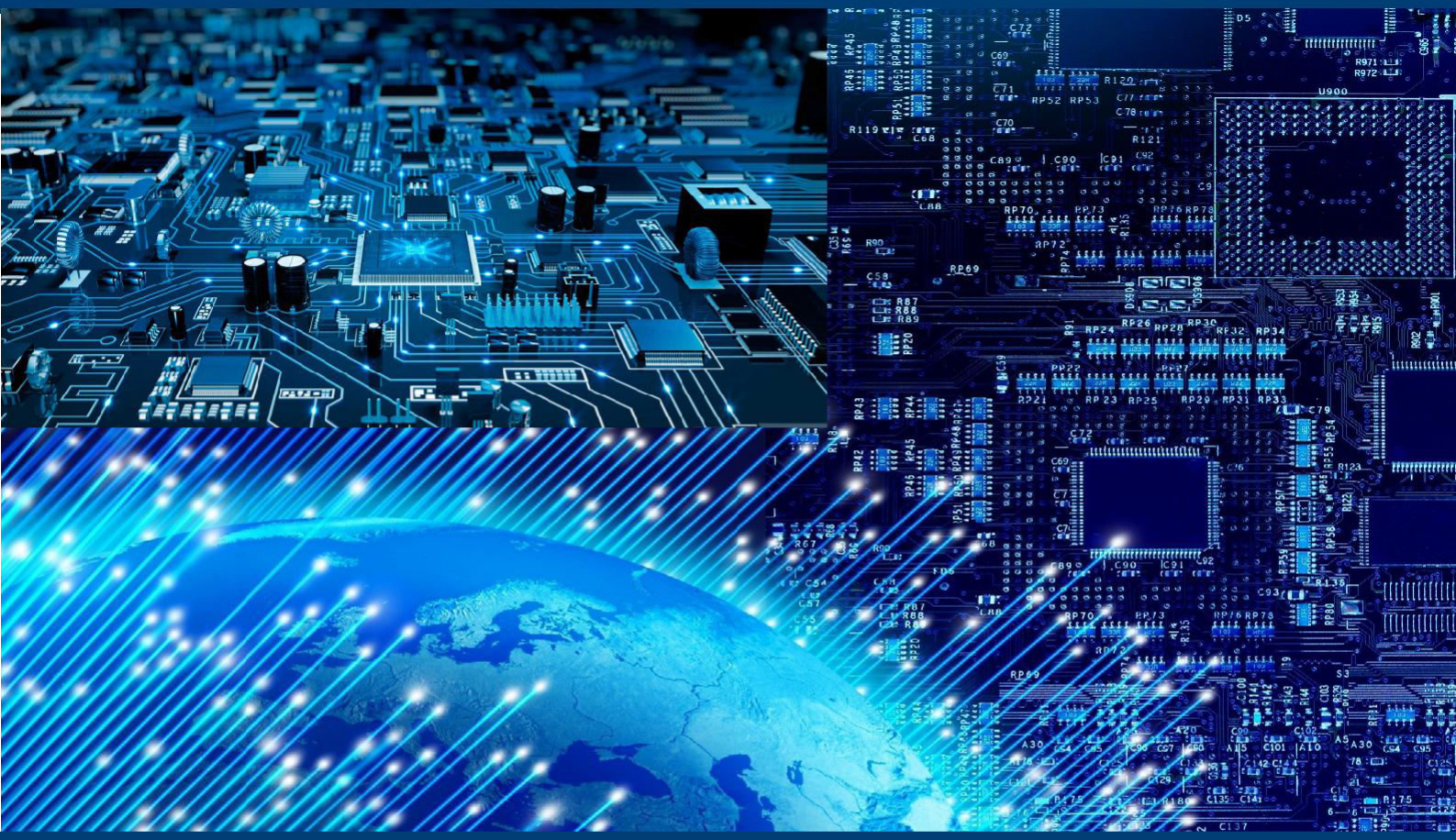

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |